किशोरी मोरी, अब न लगाओ बार ।
मांगत भीख कृपा की केवल, खड़ो तिहारे द्वार ।
रसिकन-मुख अस सुनी दीन को, आदर येहि दरबार ।
देर होत अंधेर नहीं बस, इहै रह्यो आधार ।
देर भये जनि जानेहु तजिहौं, हौं जड़ हठी गमार ।
कहिहौं नहिं 'कृपालु' काहू सों, आ जाइय इक बार ॥

भावार्थ-

हे अलबेली राधिके !

अब देर न करो । मैं तुम्हारे द्वार-पर खड़ा होकर तुम्हारी कृपा की भिक्षा माँग रहा हूँ । महापुरुषों के मुख से सुना है कि तुम्हारे दरबार में दीनों का सदा सम्मान हुआ करता है । फिर भी जो देर हो रही है इसे 'देर होता है अन्धेर नहीं', इस लोकोक्ति के अनुसार समझकर विश्वास पूर्वक आशा लगाये बैठा हूँ । किशोरी जी ! तुम्हारी कृपा पाने में कितनी ही देर क्यों न हो, पर तुम यह न समझना कि मैं पक्का जड़, हठी एवं मूर्ख हूँ । 'कृपालु' कहते हैं कि हे किशोरी जी ! चुपके से आप मुझे दर्शन दे जाओ । यदि तुम्हें यह भय हो कि तुम और लोगों से कह दोगे, तो मैं वचन देता हूँ कि मैं किसी से नहीं कहूँगा ।

© 2008 जगद्गुरु कृपालु परिशत्